शंङ्ख कल्प तथा शङ्ख महिमा

भारतीय संस्कृति और धर्म में शंख का बड़ा महत्त्व है। विष्णु के चार आयुधों में शंख को भी एक स्थान मिला है । मन्दिरों में आरती के समय शंखध्वनि का विधान है तथा प्रत्येक तान्त्रिक पूजा में शंख के द्वारा अभिषेक का माहात्म्य है । विवाह तथा शवयात्रा, युद्ध एवं अन्य पुण्यकर्मों के आरम्भ में भी शंखध्वनि को पवित्र माना गया है। अथर्ववेद के चौथे काण्ड में १० वाँ सूक्त **'शंखमणि सूक्त'** के नाम से प्रसिद्ध है । इस सूक्त के ऋषि अथवा तथा शंखमणि हैं । सूक्त के ७ मन्त्रों में कहा गया है कि-यह शंख अन्तरिक्ष, वायु, ज्योतिर्मण्डल एवं सुवर्ण से

उपलब्ध है। इसकी ध्वनि शत्रु ओं को निर्बल करने वाली है। यह हमारा रक्षक है। समुद्र से उत्पन्न यह शंख राक्षसों और पिशाचों को वशीभूत करने वाला, रोग, अज्ञान एवं अलक्ष्मी को दूर भगाने वाला तथा आयु का वर्द्धक है । यह चन्द्रमा अमृतमण्डल से उत्पन्न है । इसे रथी और वीर लोग धारण करते हैं। आदि।

इसी प्रकार अन्य ग्रन्थों में कहा गया है कि-

शङ्खं चन्द्रार्कदैवत्यं मध्ये वरुणदैवतम् ।

पृष्ठे प्रजापति विद्यादग्रे गङ्गां सरस्वतीम् ।

त्रैलोक्ये यानि तीर्थानि वासुदेवस्य चाज्ञया।

शंखे तिष्ठन्ति विप्रेन्द्र तस्मात् शंखं प्रपूजयेत् ॥

दर्शनेन हि शङ खस्य किं पुनः स्पर्शनेन तु ।

विलयं यान्ति पापानि हिमवद् भास्करोदये ।

अर्थात्-शंख चन्द्र और सूर्य के समान देवस्वरूप है। इसके मध्य में वरुण, पृष्ठ भाग में ब्रह्मा और अग्रभाग में गंगा

नदी का निवास है। तीनों लोक में जितने भी तीर्थ हैं वे सब भगवान् विष्णु की आज्ञा से शङ्ख में निवास करते हैं । अतः हे ब्राह्मण श्रेष्ठ ! शंख की पूजा करनी चाहिए । शंख के दर्शन मात्र से सभी पाप ऐसे नष्ट हो जाते हैं जैसे कि सूर्योदय होने पर बर्फ पिघल जाता है। फिर स्पर्श की तो बात ही क्या ?

"दक्षिणावर्तशङ्खोऽयं यस्य सद्मनि तिष्ठति ।

मंगलानि प्रवर्तन्ते तस्य लक्ष्मीः स्वयं स्थिरा।।

काञ्चनी मेखलां कृत्वा शुचिस्थाने निधापयेत् ।

शुचिस्तं पूजयेन्नित्यं कुसुमैश्चन्दनस्तथा।

दुग्धेन स्थापनीयोऽयं नैवेद्यस्तोषयेत् सदा ।

दक्षिणावर्त-शङ्खोऽयं सर्वलक्ष्मीफलप्रद :॥

यह दक्षिणावर्त शङ्ख जिसके घर में रहता है वहाँ मंगल ही मंगल होते हैं, लक्ष्मी स्वयं स्थिर निवास करती हैं। सोने की मेखला बना कर इसे पवित्र स्थान में रखें और

पवित्रतापूर्वक नित्य पुष्प, चन्दन आदि से पूजा करें। इसे दूध भरकर रखना चाहिए तथा नैवेद्य चढ़ा कर उसे प्रसन्न करे। ऐसा करने से सर्वविध लक्ष्मी प्राप्त होती है।" यह कहकर प्रशंसा की गई है और यहाँ तक कहा गया है कि-

चन्दागुरुकर्पूरैः पूजयेद् यो गृहेऽन्वहम् ।

स सौभाग्ये कृष्णसमो धने स्याद् धनदोपमः॥

शंख उत्पत्ति

शंख की उत्पत्ति के बारे में 'ब्रह्मवैवर्त पुराण' के प्रकृति खण्ड के १८ वें अध्याय में एक आख्यान है। वहां कहा गया है कि-'भगवान् शंकर तथा शंखचूड़ राक्षस में परस्पर युद्ध हुआ। इस युद्ध में शिवजी ने भगवान विष्णु से त्रिशूल प्राप्त करके उसके द्वारा शंखचूड का वध किया और उसके अस्थि-पंजर को समुद्र में डाल दिया । वही आगे शंख के रूप मे उत्पन्न हुआ। इसीलिये शंख में रखा हुआ जल तीर्थजल-गंगाजल के समान पवित्र होता है और यह देवताओं को अति प्रिय हैं।"

पद्मपुराण के उत्तरखण्ड के १२ वें अध्याय में शंख का वर्णन आता है जिसमें शंख का विस्तृत माहात्म्य दिखाया है। अन्य पुराणों में भगवान विष्णु के मत्स्यावतार लेने और शंखासुर के मारने संबंधी आख्यान हैं। शंखासुर ने वेदों को चुरा लिया था और उन्हीं को प्राप्त करने के लिये मत्स्यावतार लेकर विष्णु ने उसका वध किया। उसी प्रसंग में शंख के जल से स्नान आदि का माहात्म्य भी विस्तार से वर्णित किया है। समुद्र-मंथन से निकले हुए १४ रत्नों में शंख भी निकला था। इसलिए यह एक रत्न ही है। कोषकारों ने नौ निधियों में शंख को एक निधि माना है । इसी प्रकार आयुर्वेद, ज्योतिष शकुन शास्त्र तथा सामुद्रिक शास्त्र में भी शंख के बारे में पर्याप्त विचारर आता है ।

शंख के प्रमुख भेद

शंख के मुख्यतया दो प्रकार हैं-एक दक्षिणावर्त और दूसरा वामावर्त । इसमें दक्षिण की ओर जिसका पर्दा खुला होता है, उसे दक्षिणावर्त तथा बाई ओर जिसका पर्दा खुला हो

उसे वामवर्त कहते हैं। दक्षिणावर्त-शंख सर्वत्र सुलभ नहीं होते हैं और इनका मूल्य भी अधिक होता है, जबकि वामावर्त सर्वत्र प्राप्त होते हैं। दक्षिणावर्त शंख के दो भेद हैं १. पुरुष-शंख तथा २. स्त्री-शंखिनी । इनमें जो मोटी परत वाला तथा भारी होता है उसे पुरुष-शंख कहते हैं तथा पतली परत तथा हलके वजन वाले को स्त्री-शंखिनी कहते हैं।

जिस प्रकार मानवजाति के ब्राह्मण आदि चार वर्णों की मान्यता है उसी प्रकार शंख की भी चार वर्णों के रूप में मान्यता है जिनका परिचय इस प्रकार है-

द्विजातिभेदेन स पुनस्तु चतुर्विधः।

श्वेतो रक्तः पीतकृष्णौ ब्रह्मक्षत्रादिवर्णजाः ।।

अर्थात्-

१. जो शंख चिकना, गहरे वर्ण का श्वेत, कोमल तथा हलका होता है वह **ब्राह्मण-संज्ञक** है।

२. जो शंख कर्कश, प्रत्येक अंश में विभक्त रेखाओं वाला तथा अधिक भार वाला लाल रंग का होता है, वह **क्षत्रिय-संज्ञक** है।

३. जो शंख भारी होते हुए भी कोमल हो, प्रत्येक अंश में रेखाओं से विभक्त हो तथा पीले रंग का हो, वह **वैश्य-संज्ञ**क है ।

४. जो शंख कठोर तथा टेड़े-मेढ़े आकार का हो, जिसका अंग कर्कश हो तथा कालेपन से युक्त और भार में भी बहुत अधिक हो, वह **शूद्र-संज्ञक** है-

इस प्रकार अन्य ग्रन्थों में देवताओं की दृष्टि से भी शंख के कुछ भेद दिखाए गए हैं जिनमें-

(१) गणेश शंख- इस शंख के अन्दर और बाहर सिन्दूर के समान रंग होता है तथा पुच्छभाग छोटा होता है। यह शंख बहुत कम मिलता है। भारत में प्रायः ५-७ शंख ऐसे प्राप्त हैं। अतः इनका मूल्य भी ५-६ हजार से कम नहीं हैं।

(२) देवी शंख-इस शंख में पीला वर्ण अथवा लाल वर्ण

होता है या ऐसे वर्णों की रेखाएँ होती है। पुच्छभाग पर्याप्त लम्बा होता है। साधारण कालिमा है और ताम्रवर्ण से युक्त होने पर भी यह उत्तम माना जाता है। कहा जाता है कि देवी-शंख का पुच्छभाग तीस इंच तक लम्बा होता है।

(३) विष्णु शंख-इस शंख का वर्ण श्वेत होता है। मोती की झाई से युक्त होने पर अथवा दधि के समान पूर्ण उज्ज्वल होने पर यह उत्तम माना जाता है।

वैसे दक्षिणावर्त शंख के तीन गण अच्छे माने गये हैं-

वृत्तत्वं स्निग्धताच्छत्वं शंखस्येति गुणत्रयम् ।

अर्थात् गोल आकार, चिकनापन तथा निर्मलता ये तीन शंख के गुण हैं। कभी- -कभी असावधानी से अथवा प्राचीनतावश ऐसे संख खण्डित भी हो जाते हैं। अतः दोष -निवारण के लिये उस पर सुवर्ण लगाने या मढ़ देने से वह दोष दूर हो जाता है, ऐसी शास्त्राज्ञा है-

आवर्तभङ्गदोषो हि हेमयोगाद् विनश्यति ।

जाति-यह भी कहा जाता है कि जो शंख, घृत, दधि, पिष्ट अथवा बगुले के समान श्वेतवर्ण का हो वह पुरुष जाति का होता है तथा जो मेघ के समान श्याम अथवा राख के समान वर्ण का हो वह स्त्री जाति (शंखनी) का होता है।

शंख की परीक्षा-

शंख वास्तविक है अथवा कल्पित, इस बात को पहचानने के लिए किसी एक पात्र में पूरा शंख डूब जाए इतना पानी भरकर उसमें किसी प्रकार का क्षार मिला दें। फिर उसमें पाँच दिन तक शंख को डुबोकर रख दें। यदि वह कल्पित होगा, तो काला पड़ जाएगा।

भार के आधार पर उत्तम मध्यमता-

वैसे तो तीन तोले के वजन से अधिक होने पर शंख उत्तम माना जाता है; किन्तु अन्यत्र कहा गया है कि २५ से ५१ तोले तक का शंख उत्तम है, २५ तोले से कम ११ तोलेनतक के वजन का होने पर मध्यम तथा उससे कम होने पर सामान्य होता है । जिस शंख पर छाल हो वह भी

ग्राह्य है । नकली शंख ७ दिन तक पानी में (कलमी सोड़े के साथ) रहने से फट जाता है। ये शंख कान के पास रखने से ॐकार ध्वनि करते हैं । अतः यदि उन पर फूल, दाग अथवा अन्य किसी प्रकार के दोष होने पर भी वे यदि ॐकार की ध्वनि करते हों, तो उन्हें पूजा में ग्रहण करना चाहिए ।

भारत में दक्षिण समुद्र के किनारे पर तथा मध्यप्रदेश में इन्दौर से आगे तक नदी के किनारे पर ये शंख मिलते हैं। कन्या कुमारी में विष्णु शंख, धनुष्कोटि में गणेश शंख तथा सिलोन के किनारे पर देवी शंख मिल जाते हैं, ऐसी जनश्रुति है।

'दक्षिणावर्त शंख-कल्प' के नाम से तीन-चार कल्प यत्र-तत्र प्राप्त होते हैं । इनमें 'भवनेश्वरी पीठ' गोंडल सौराष्ट्र से संवत् १८०५ में लिखित प्रति के आधार पर सर्वप्रथम जो कल्प मुद्रित हुए उन्हीं का सर्वत्र प्रचार है । अतः पहले उन्हें ही यहाँ अनुवाद-सहित शुद्ध करके दे रहे हैं-

१. अथ दक्षिणावर्त-शङ्ख-कल्पः (प्रथमः)

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूँ सुदक्षिणावर्तशङ्खाय नमः । इति पूजामन्त्र। १०८ वारं नित्यं पूज्यते चन्दनागरुकर्पूरैः । प्रथमयामपूजायां राज्यमानम् । द्वितीययामे श्रीवृद्धिः। तृतीययामे यशःकीर्तिवृद्धिः । चतुर्थयामे सन्तानवृद्धिः । स च शङ्खश्चन्दनचर्चितः सन् एकवर्णगोदुग्धेन प्रक्षाल्य तद् दुग्धं यदि वन्ध्याय दीयते तदा सुतोत्पत्तिः मृतवत्साय वत्सजीवनम् । कुक्षिपूजा परावर्तः स आयुष्मान् सुरेन्द्रप्रियो भवति । विसदृशच्छाये शङ्खे पूजकस्य नाशः स्यात् ।

ॐ श्री श्रीधरकरस्थाय पयोनिधिजाताप लक्ष्मीसहोदराय चिन्तितार्थप्रदाय श्रीदक्षिणावर्तशखाय ह्रीं श्रीं श्रीकराय पूज्याय नमः ।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं दक्षिणमुखाय शङ्खनिधये समुद्रप्रभवाय नमः।

एकमासं यावत् प्रत्यहं १० मालाजप : कार्यः।

प्रथम कल्प का अर्थ

ॐ ह्रीं श्रीं क्ली ब्लू सुदक्षिणावर्तशङ्खाय नमः'

यह पूंजा मन्त्र है। चन्दन, अगर तथा कपूर से प्रतिदिन पूजा कर के १०८ बार उपर्युक्त मन्त्र का जप करना चाहिये। इस मन्त्र जप से की जाने वाली पूजा के लिए विभिन्न फल इस प्रकार हैं -

(१) दिन के पहले पहर में पूजा जप करने से राज-सम्मान प्राप्त होता है।

(२) दिन के दूसरे पहर में पूजा तथा जप करने से श्रीवृद्धि होती है।

(३) दिन के तीसरे पहर में पूजा तथा जप करने से यश और कीर्ति बढ़ती है।

(४) दिन के चौथे पहर में पूजा तथा जप करने से सन्तानवृद्धि होती है।

(५) इस शंख की चन्दन से पूजा करके एक रंग को (कपिला) गौ के दूध से स्नान कराये और वह दूध यदि बाँझ स्त्री को दिया जाए, तो पुत्रोत्पत्ति हो। मृतवत्सा को देने से पुत्र जीवित रहता है। शंख की कुक्षि और आवर्त को पूजा करने से पूजक सुरेन्द्र का प्रिय होता है। एक समान छाया वाले शंख की पूजा उत्तम है । असमान छाया वाला शंख पूजक का नाश करता है।

'ॐ श्री श्रीधरकराय' इत्यादि मन्त्र अथवा **'ह्रीं श्रीं क्ली ब्लूँ दक्षिणमुखाय'** इत्यादि मन्त्र का एक मास तक प्रतिदिन जप करना चाहिये।

२. अथ द्वितीयः कल्पः

समुद्रस्योत्तरे कोणे, शंखधारावती पुरी।

तस्यां शंखाः समुत्पन्ना,वामावर्ताः सहस्रशः॥१॥

तेषां मध्येऽपि राजाख्यो, दक्षिणावर्ततां गतः ।

शंखारूढोऽपि सर्वत्र, जले खेलति निर्भयः॥२॥

कृष्णायुधमिव श्रेयान सम्मान्यः सर्वशंखकः।

सतं कश्चित् पुण्ययोगेन, प्राप्नोति पुरुषोत्तम ॥३॥

तस्व राजा वंश याति, धन-धान्यैर्न मुच्यते ।

जे दृष्टाश्व-गज-सर्पेभ्यो, न भयं तस्य सम्भवेत् ।। ४ ।।

शाकिनी-भूत-वेतालाः, पिशाचा ब्रह्मराक्षसा।

प्रभवन्ति न वै तस्य, यन्त्र शंखो महाद्युतिः ॥५॥

अकाले मरणं नास्ति, दुर्जनैर्नोपहन्यते ।

अग्नि-चौरभयं नैव, शुभं सर्वत्र जायते ॥६॥

सुरभिदुग्धवर्णाभो, धूसरच्छायतां गतः।

नग्राह्यः स हि दोषाणां, प्रभवः परिकल्पितः ॥७॥

रक्त-पीत-हरिच्छ् वेत-द्युतिराभ्यन्तरे भवेत् ॥

स श्रीसन्तानदिक्कीर्ति, प्रददाति न संशयः॥८॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्ली ब्लूँ श्रीदक्षिणावर्तशंखाय भगवते विश्वरूपाय सर्वयोगीश्वराय त्रैलोक्यनाथाय सर्वकामप्रदाय

सर्व-ऋद्धि-समृद्धि वाञ्छितार्थसिद्धिदाय नमः । (अग्रतो लक्ष्मीबीजानि सञ्चिन्त्य ध्यानादि पुरस्सरं पूर्वोक्तमन्त्रण कर्पूरादिसुगन्धिद्रव्यै श्वेतपुष्पैः प्रत्यहं पूजा कार्या।)

ॐह्रीं श्रीं क्लीं ऐं महालक्ष्मी मम वाञ्छितार्थसिद्धि कुरु कुरु स्वाहा । (इति मन्त्रं च जपेत् ।)

पूर्व स्वर्णभागं १२ तारं १६ प्रवेष्ट्य तदनु सुवर्णपत्रस्योपरि निम्न- यन्त्रं समालिख्य तस्योपरि शंखो मोचनीयः रौप्यमञ्जूषायां संस्थाप्यते । तेन रक्षणीयः। एतस्य पूजकगृहे लक्ष्मीः पुष्कला स्यात् ।

द्वितीय कल्प का अर्थ

समुद्र के उत्तरकोण में शंख धारावती नामक पुरी है। उसमें वामावर्त-बाईं पांख वाले अनेक शंख उत्पन्न हुए हैं।। १ । उनमें शंखराज के रूप में दक्षिणावर्त-दाहिनी पांखवाला शंख जल में स्थित सभी शंखों पर आरूढ़ होकर निर्भयतापूर्वक विहार करता है ॥ २ ॥ वह दक्षिणावर्त शंख अन्य सभी शंखों की अपेक्षा सम्मान्य तथा भगवान् विष्णु का आयुध होने के कारण अत्यन्त मंगलमय है ।

उसे पुरुषों में कोई श्रेष्ठ पुरुष ही पूर्वपुण्यों के योग से प्राप्त करता है ।। ३ ॥ यह शंख जिसके पास रहता है, राजा उसके वश में रहते हैं, वह धन-धान्य से रहित नहीं होता। दुष्ट, घोड़े, हाथी अथवा सर्प का भय उसे नहीं सताता ।। ४ ॥ शाकिनी, भूत, वेताल, पिशाच, ब्रह्मराक्षस आदि जहाँ यह कान्तिशाली शंख रहता है वहां नहीं रहते हैं ॥ ५ ॥ इस शंख की पूजा करने वाले को आकस्मिक मृत्यु नहीं होती। दुर्जन उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकते। अग्नि अथवा चोर के भय से वह पीड़ित नहीं होता तथा सर्वत्र उसका शुभ होता है ॥ ६ ॥ गाय के दूध के समान कान्तिवाला शंख उत्तम कहा जाता है। धुएं के समान रंग वाला उत्तम नहीं होता। अतः ऐसा शंख पूजा में नहीं रखना चाहिए। वह दोषों का उत्पादक है ॥ ७ ॥ लाल, पोलो, हरी अथवा श्वेत कान्ति जिसमें चमकती हो वह शंख लक्ष्मो, सन्तान और दिशाओं में कोति प्रदान करता है । इसमें सन्देह नहीं ॥८॥

'ॐ ह्रीं श्रीं" इत्यादि मन्त्र से पूर्व श्री बीज बोलकर शंख को कपूर आदि सुगन्धित द्रव्य तथा श्वेत पुष्पों से पूजा करे तथा **'ॐ ह्रीं'.श्रीं क्लीं ऐं महालक्ष्मी'** इत्यादि मन्त्र का जप

करे ।'

१२ भाग सुवर्ण तथा १६ भाग चाँदी से बनाये गये पतरे पर.बताये गये यन्त्र बनवाकर इस शंख को ऊपर रखे। पूजा के पश्चात्.एक चाँदी की पेटी में इसे स्थापित करे जिस पर अगले पृष्ठ पर बताई हुई आकृति के समान यन्त्र लिखा हो। ऐसा करने से पूर्ण लक्ष्मी प्राप्त होती है ।
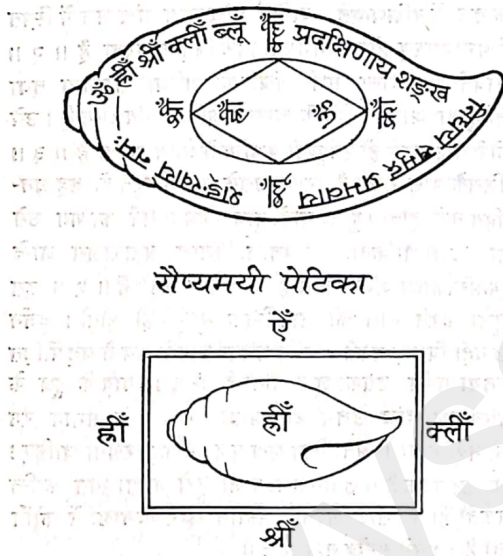
अथ तृतीयः कल्पः

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि, लोकानां हितकाम्यया ।

दक्षिणावर्तमाहात्म्यं, हवंकामितदायकम् ॥१॥

श्वेतवर्णो महान् भव्यः, पीतवर्णस्तु मध्यमः।

श्यामाभः कीटकाकीर्णो नैव वाञ्छितदायकः ॥२॥

यथा यथा वृद्धिमान् स्यात्, तथाधिकफलप्रदः ।

गृहीत्वा गुप्यसंस्थाने, स्थाप्यो देवालये वरे ॥३॥

अष्टम्यां च चतुर्दश्यां, प्रतिष्ठाप्य सुविस्तरैः ।

सूरिमन्त्रैः स्वमन्त्रेण, शुभलग्ने फलप्रदः ॥ ४॥

षड्दश द्रव्यमादाय, वासः सिद्धार्थपुष्पकैः ।

कर्पूरचन्दनाद्यश्च चर्चयेद् गाङ्गवारिणा ॥ ५॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्ली ब्ल प्रदक्षिणाय नमः (अयं प्रदक्षिणामन्त्रः)

ॐ नमो भगवन् प्रदक्षिणावर्त ! क्षीरोदधितनय ! लक्ष्मीभ्रातः !

अन्न सपरिवारेण अमुकस्य गृहे तिष्ठ तिष्ठ, पूजां बलि गृह्ण गृह्ण, मनोर-

थान् पूरय पूरय, श्रीं नमः । (अनेन मन्त्रेण पूजा कार्या)।

तृतीय कल्प का अर्थ

अब मैं संसार के कल्याण की भावना से सर्वकामनाओं को पूर्ण करने वाले दक्षिणावर्त शंख का महात्म्य कहता हूँ ॥१॥ सफेद वर्ण वाला दक्षिणावर्त शंख अतिभव्य होता है, पीले रंग का मध्यम होता है, काले धुएं के समान रंग वाला और कीड़ों के द्वारा खाया हुआ उत्तम नहीं होता है ।। २॥ यह शंख जितना-जितना बड़ा होता है, वह अधिक फलप्रद होता है । इस शंख को किसी गुप्त स्थान में अथवा उत्तम देवालय में रखना चाहिए ।। ३॥ अष्टमी अथवा चतुर्दशी को विधिपूर्वक सूरिमन्त्र' अथवा अपने इष्टमन्त्र द्वारा शुभ लग्न में इसकी प्रतिष्ठा करने से यह उत्तम फल देता है ।। ४॥ इस शंख को गंगाजल से स्नान कराये, कपूर और चन्दन से पूजन करे और सुगन्धित उत्तम पुष्पों में विराजमान करे । इस प्रकार षोडशोपचार पूजन से यह इच्छित फल देता है ॥ ५॥

अथ दक्षिणावर्तशंखस्तुतिः

नमामि सकलार्थसिद्धिदं, सुश्वेतवर्णं कमलासहोदरम् ।

क्षीरोदपुत्रं मनसोऽर्थदायक, राज्यार्थसन्तानफलप्रदं भजे ॥ १॥

कल्याणकारी दुरितापहारी, मनोऽर्थधारी घनविघ्नतारी ।

श्रीदक्षिणावर्त-सुरम्यनाथ ! मनोरथं पूरय मे समग्रम् ॥२॥

अर्थ-उत्तम श्वेत वर्ण वाले लक्ष्मी के भाई तथा समस्त इच्छित वस्तु को देने वाले देवस्वरूप 'दक्षिणावर्त शंख को मैं प्रणाम करता हूँ। समुद्र के पुत्र, मन की इच्छाओं को पूर्ण करने वाले तथा राज्य, धन, सन्तान आदि के फल को देने वाले शंख का मैं स्मरण करता हूँ ॥१।। हे दक्षिणावर्त शंखदेव ! आप कल्याणकर्ता, पापहारी, इच्छित दाता तथा दुष्टविघ्नों से बचाने वाले हैं। अतः हे देव । मेरे सभी

मनोरथों को पूर्ण करो॥२॥

अथ ध्यानम्

. ॐ सर्वाभरणभूषिताय प्रशस्यांगोपांगसंयुताय कल्पवृक्षाधः स्थिताय कामधेनु-चिन्तामणि-नवनिधिरूपाय चतुर्दशरत्नपरिवृत्ताय महासिद्धिसहिताय लक्ष्मीदेवतायुधाय कृष्णदेवताकर-लालिताय श्री शंखमहानिधये नमः।

अर्थ-सर्वविध आभरणों से भूषित, उत्तमोत्तम अङ्ग और उपांगों से युक्त, कल्पवृक्ष के नीचे स्थित, कामधेनु, चिन्तामणि और नवनिधि स्वरूप, चौदह रत्नों से परिवृत्त, आठ महासिद्धियों से संयुक्त, लक्ष्मी देवता के साथ कृष्ण भगवान् के हाथ में शोभायमान श्री शंख महानिधि के लिए मैं प्रणाम करता हूँ।

अथ प्रतिष्ठामन्त्रः

ॐ सर्वतोभद्राय सर्वाभीष्टफलप्रदाय सर्वारिष्ट-दुष्ट-कष्ट-निवारकाय कामितार्थप्रदाय शङ्खाय स्वाधिष्ठायकाय

भास्करीं क्लीं श्रीं ब्लूं क्रौं नमः स्वाहा।

इस मन्त्र से प्रतिष्ठा करके नीचे लिखे मन्त्र का जाप करे-

'ॐ.ह्रीं श्रीं ब्लूं श्रीधरकरस्थाय पयोनिधिजाताय श्रीकराय जनपूज्याय दक्षिणावर्तशंखाय सुरपूज्याय देवाधिष्ठताय क्लीं श्रीं श्रीं.नमः॥

अथ शंख-प्रार्थना

ॐअग्निऋषिः पवमानः पाञ्चजन्यः पुरोहितः । तमीमहे गयम्।

त्वं पुरा सागरोत्पन्नो विष्णुना विधृतः करे।

निमितः सर्वदेवेश्वपांचजन्य ! नमोऽस्तुते ।।

मुनिराज श्री अभयसागर जी, गणिमहाराज द्वारा आचार्यश्री रुद्रदेव त्रिपाठी जी को **शंख का एक प्रयोग** इस प्रकार भी बताया गयाहै-

आश्विन शुक्ल २ को प्रातः ६ बजे गाय के धारोष्ण दूध ११ सेर में (शंख की ऊपर की चोटी ही सिर्फ बाहर रहे) पूर्व अथवा उत्तर दिशा में उसकी चोटी रहे इस तरह चाँदी अथवा कांसे के पात्र में दक्षिणावर्त शंख को रखे। घी का दीपक लगाकर ३७ मिनट में ॐ ह्रीं तत्सत् परब्रह्मणे नमः मन्त्र की ५ माला फेरे । बाद में स्नानादि करके बकरी का मूत्र १/४ सेर, मींगनी १० तोला, गोमूत्र २५ तोला, कंडे की राख १/२ सेर मिलाकर सुखाकर गोले या कंडे बना ले। फिर ठीक दोपहर में १२३, बजे घी का दीपक लगाकर **'ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं नमः क्ली'** मन्त्र की १३ माला फिराये। यह मूलमन्त्र है ।

शाम को सूर्य आधा अस्त हो उस समय चाँदी के पात्र में दूसरा दूध तैयार कर रखे और शंख को निकालकर शुद्ध कूपोदक से स्वच्छ कर, कपड़े से पोंछकर चन्दन से पूजा कर पुनः मूलमन्त्र ७ बार पढ़कर शंख को नये दूध में रख दे। सुबह के दूध में जावन (मेलवण) मिलाकर दही मिला ले।

रात्रि को ठीक ११३ से १३ तक 'ॐ ह्रीं तत्सत् परब्रह्मणे नमः ह्रीं' मन्त्र की ११ माला और मूलमन्त्र की २१ माला फिराकर दर्भासन पर बांईं करवट शंख को सिरहाने की ओर रखकर पास में सो जाय । पुनः ३ को प्रातः नये दूध में इसी प्रकार स्थापना करे। रात्रि के दूध को जमाकर दही बना ले । शेष विधि द्वितीय के समान ही करे । इस तरह सुदी ५ तक करे। सुदी ५ की शाम को दूध से निकालकर चने का आटा सेर उसमें १ सेर चीनी मिलाकर उसमें चावल का आटा सेर मिलाए। तथा शंख को उसमें रखे । सुदी ७-८ और ६ की रात्रि को १२ बजे तक घो का दीपक आटे में रखने के बाद अखण्ड रखे।

नवमी की रात्रि को १२ बजे चीनी के पानी से शंख को स्नान कराकर शुद्ध जल से धो ले। फिर पीले कपड़े में लपेटकर ४ श्रीफल के बीच में ५ रुपये नकद के ऊपर शंख को पधराए। पूरे दिन और रात विजयादशमी को उपवास रखे और सामने बैठकर मूलमन्त्र का १२,५०० जप करे। फिर प्रतिदिन 'ॐ तत् सत् परब्रह्मणे नमः' मन्त्र

की तीन माला और मूलमन्त्र की ७ माला फिराये। अश्विन शुक्ल २, ३, ४, ५ के दूध का जो दही बनाया हो उसका बिलोना करके मक्खन निकालकर छाछ गौमाता को पिलाये तथा घी का दीपक प्रतिदिन माला फिराये तब तक करे । उस घी को खत्म न होने दे। थोड़ा-थोड़ा दूसरा घी मूलमन्त्र के २१ जप के साथ मिलाता रहे। अगले आश्विन की नवरात्रि तक वह घो चलना चाहिए। इस तरह ४ नवरात्रि के बाद यह शंख इष्टसिद्धि करने वाला होता है।

[विशेष गुरु के चरणों में बैठकर समझने की चेष्टा करें।

५. अन्य प्रयोग

ऐसी ही अन्य विधियां रुद्राभिषेक लक्ष्मीसूक्त आदि के पाठ द्वारा भी सम्पन्न होती हैं।

फलश्रुति-

इस प्रकार जप, ध्यान, पूजन आदि करने से सब प्रकार की सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं और अनेकविध पुण्य-फल प्राप्त होते हैं

जिनका वर्णन निम्नलिखित पद्यों में किया गया है-

दक्षिणावर्तशङ्खन गत्वा प्राक् स्रोतसी नदीम् ।

कृत्वाभिषेकं विधिवत् ततः पापैः प्रमुच्यते ॥१॥

दक्षिणावर्तशंखैन तिलमिश्रोदकेन ।।

उदके नभिमात्रे तु यः कुर्यादभिषेचनम् ॥ २॥ .

प्रास्रोतस्यां नरो नद्यां नारी तवाम्भसा प्लुता।

यावज्जन्मकृतं पापं तत्क्षणादेव नश्यति ॥ ३॥

दक्षिणावर्तशंखेन नद्यास्तीर्थस्थलस्य वा।

उदकं यः प्रतीच्छेत शिरसा हृष्टमानसः ॥४॥

तरन्ति पितरस्तस्य नश्यन्ति पातकानि च ।

न शङ्खेन पिबेत्तोयं न हन्यान्मत्स्यशूकरौ ॥५॥

दक्षिणावर्तशंखस्य तोयेन चार्चयेद्धरिम् ।

सप्तजन्मकृतं पापं तत्क्षणादेव नश्यति ॥ ६ ॥

दक्षिणावर्तशङ्खस्तु कुर्यादायुर्यशो धनम् ।

दुःखानि चास्य नश्यन्ति सौख्यं सर्वत्र विन्दति ॥ ७ ।।

तेनैव शिरसा यस्तु श्रद्धधानः प्रतीच्छति ।

वारि हित्वा स पापानि पुण्यमाप्नोति मानवः ॥ ८ ॥

वृत्तत्वं स्निग्धताच्छत्वं शंखस्येति गुणत्रयम् ।

आवर्तभंगदोषो हि हेमयोगाद्विनश्यति ॥९॥

द्विजादिजातिभेदेन स पुनस्तु चतुर्विधः।

श्वेतो रक्तः पीतकृष्णौ ब्रह्मक्षत्रादिवर्णजाः ॥१०॥

शङ्खशब्दो भवेद्यत्र तत्र लक्ष्मीश्च सुस्थिरा।

स स्नातः सर्वतीर्थेषु यः स्नातः शंखवारिणा ॥११॥

शङ्खे हरेरधिष्ठानं यत्र शङ्खस्ततो हरिः।

तत्रैव सततं लक्ष्मीर्दूरीभूतममंगलम् ॥ १२ ॥

स्त्रीशूद्रश्च कृतैः शंखध्वनिभिश्च विशेषतः ।

भीता रुष्टा याति लक्ष्मीः स्थलमन्यत्स्थलात्ततः ॥ १३ ॥

और अन्य कल्प में-

पुष्पसंस्तारके स्थाप्य क्षीर-गंगादिवारिणा ।

प्रक्षाल्य पूजयेन्नित्यं कर्पूर-चन्दनादिभिः ॥१॥

पूर्वाह्णे राज्यसम्मानं द्वितीये जनवल्लभः ।

तृतीये धनवृद्धिश्च चतुर्थे पुत्रसन्ततिः ॥ २ ॥

ददाति पूजितो नित्यं चतुर्भिः प्रहरै पृथक् ।

चिन्तामणिसमो ज्ञेयो दक्षिणावर्तशंखकः ॥३॥

यां यां हि कामनां कृत पूज्यते जलजो यथा।

जापे ध्याने स्थितस्याथ ददाति सततं हितम् ॥४॥

वन्ध्यां पुत्रप्रदो ज्ञेयो निर्धनस्य धनप्रदः ।

अराज्यस्य ददद् राज्यं कामुकस्य हि कामितम् ॥ ५॥

इत्यादि।

(इन पद्यों के अर्थ विस्तार-भय से नहीं दिये गये हैं, विद्वानों के सम्पर्क से ज्ञात करें।

इति दक्षिणावर्त-शंख-कल्प-प्रयोगाः ।